''भाई राजीव जी'' एक ऐसा व्यक्ति जो सदैव देश के बारे में चिन्तन करता था, एक ऐसी आत्मा जो वह कहती, उसको जीती थी, एक ऐसा व्यक्ति जो देखने में तो बहुत सामान्य सा लगता था लेकिन ज्ञान के भण्डार में बहुत ही विस्तृत, विराट व विशेष था।

राजीव भाई जो मात्र दो जोड़ी कपड़ों के साथ पूरे भारत में घुमते थे, जो किसी घर या स्थान पर कम ट्रेन में ज्यादा रहते थे। एक ऐसे व्यक्ति ये जो कठिन से कठिन विषय को सरलतम भाषा में समझाते थे और उनके उस कथन को देश के 118 करोड़ आसानी से अपने भीतर उतार लेते थे। उनकी बात को देश के बुद्धिजीवी से लेकर सामान्य वर्ग तक सभी समझते थे, उनकी बात का असर मजदूर, कृषक, बच्चे, से लेकर वैज्ञानिक, प्रोफेसर व डॉक्टर तक एक समान होता था।

जिनको ज्ञान का भण्डार, चलती-फिरती लाईब्रेरी या चलता फिरता इन्साइक्लोपिडिया कहा जाता था। जिनके लिये कोई भी विषय अछुता नही था। जिनको अर्थशास्त्र से लेकर भूगोल तक एवं इतिहास से लेकर वर्तमान तक सारी जानकारी थी, जो एक बार इतिहास जैसे नीरस विषय पर बोलते थे तो लोग टकटकी लगाकर उनकी और देखते थे कि अब अगला शब्द उनके मुंह से कौन सा निकलेगा। जिनके हर विषय के व्याख्यान पर हजारों की भीड़ जहां की तहां ठहर जाती थी, ऐसा लगता था कि उनके व्याख्यान को सुनते-सुनते समय ठहर सा जाता है तथा 4-5 और कभी-कभी तो 6-8 घण्टों तक लोग खाना-पीना, लघुशंका भूलकर एकटकी लगाकर उनको लगातार सुनते रहते थे।

ऐसे व्यक्तित्व जिन्होंने स्वयं परिश्रम करके तथा प्रो0 धार्मपाल के परिश्रम को जन-जन तक पहुंचाया, जिन्होंने भारत के बच्चे-बच्चे को बतलाया कि हमारा देश, हमारी संस्कृति कितनी विराट थी, हमारा चिकित्सा शास्त्र कितना उन्नत था, हमारी शिक्षा-व्यवस्था कितनी उन्नत थी। हम भारतवासी विश्व गुरु कैसे थे।

उनको मात्र एक बार सुनने के बाद आम-जन से खास-जन के अन्दर से यह विचार स्वत: ही दूर हो जाता था कि भारत गड़रियों, सपेरों का देश था। भारत की कोई संस्कृति नही थी। उन्होंने एक-एक भारतीय में स्वदेश का स्वाभिमान जगाया। एक-एक भारतीय को यह महसूस करवाया कि भारत विश्वगुरु था, भारत सोने की चिड़िया था। भारत देवभूमि है भारत पूरे संसार में विशेष है। स्वदेशी विचार जिसकी पहली प्रेरणा महर्षि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी ने दी, उसी प्रेरणा को उन्होंने आजादी के 50 साल बाद दोबारा भारतीयों के हृदय में जगाया। उन्होंने एक-एक भारतीय को आजादी बचाओं आन्दोलन के माध्यम से झकझोर दिया कि 1947 में मिलने वाली आजादी सम्पूर्ण आजादी न होकर मात्र एक समझौता थी। 1997 को वे आजादी के 50 वर्ष न कहकर गुलामी के 50 वर्ष कहते थे वे कहते थे कि जब तक हमारी शिक्षा, चिकित्सा, कानून, अर्थ-व्यवस्था, कृषि-व्यवस्था का स्वदेशीकरण नहीं हो जाता तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। अध्ययन काल में 1984 में जब भोपाल गैस त्रासदी हुई तब उन्होंने एक स्वयं-सेवक के रूप में जाकर सेवा का अवसर मिला। वहां पर जब वे लोगों से मिले। वहां जब उन्होंने हजारों बच्चों, बहनों, बुजुर्गो की दर्दनाक मौत देखी, जो बच गये थे उनकी दर्दभरी तकलीफ देखी और जब इसके मूल जिम्मेदार कम्पनी के खिलाफ कोई कार्यवाही नही हुई तो उनके भीतर का आक्रोश बाहर आया तथा उन्होंने

ठान लिया कि अब वह इन अंग्रेजी भ्रष्ट, अंग्रेजी व्यवस्थाओं को उखाड़ फैंकने के लिए सदैव कार्य करेंगे।

29 नवम्बर 2011 की वह काली रात थी जिसमें राजीव भाई हमें छोड़कर चले गये। पूरी रात पूज्य स्वामी जी भी सो न पाये। उनको भी यूं लगा जैसे राजीव भाई के रूप में जो उनके दो हाथ जो करोड़ों हाथों के रूप में थे वह असमय छोड़कर चले गये।

रात को पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी ने दिल्ली से विशेष विमान की व्यवस्था करके भिलाई से उनकी पार्थिव देह को हरिद्वार मंगवाने की व्यवस्था की। राजीव भाई जी की शहादत का समाचार जैसे ही कार्यकर्त्ताओं को दिया गया वो फूट-फूटकर रोने लगे। राजीव भाई के छोटे भाई प्रदीप जी रात को ही भिलाई पहुंच चुके थे वह विशेष विमान के साथ देहरादून आ रहे थे। प्रात:काल के योग-सत्र में पूज्य स्वामी जी भाई राजीव जी के बलिदान से व्यथित रहे। उन्होंने भरसक पर्यत्न किया कि उनकी भावनायें, अन्दर संवेदनायें बाहर न आयें। लेकिन उनके स्वर का भारीपन, चेहरे की भावनाएं, आंखों की नमी यह बता रही थी कि उनको इससे बहुत बड़ा अप्रत्याशित धाक्का लगा है।

योगपीठ के संवाद कक्ष में लगातार फोन आने प्रारम्भ हो गये कि क्या हो गया? कोई भी कार्यकर्त्ता यह स्वीकार करने में सहज नहीं था कि भाई राजीव जी यूं बीच में छोड़कर जा सकते हैं। सभी कार्यकर्त्ताओं को ऐसा लगता था। कि कहीं न कहीं से तो यह उत्तर मिलेगा की ये खबर सत्य नहीं है। लेकिन विधाता के निर्णय अटल होते हैं। नियती के सामने इन्सान बेबस हो जाता है। किसी का मन, हृदय यह स्वीकार करने की हालत में नही था कि यह क्या हो गया?

प्रात: 10 बजे से ही कार्यकर्त्ता योगपीठ में पहुंचना शुरू हो गये। जो कार्यकर्त्ता दूर के क्षेत्र में थे वह भी जहां जैसे थे, जिस हालत में थे, बिना मौसम की परवाह किये, बिना भूख-प्यास की परवाह किये देश के अलग-अलग हिस्सों से भाई राजीव जी के अन्तिम दर्शन के लिये दौड़ पड़े।

डॉ0 जयदीप आर्य जी ओड़िशा में थे, रात से वह देख रहे थे कि कैसे जल्द से जल्द पहुंच सकते हैं। बहन सुमना: जी बिहार व झारखण्ड के सीमावर्ती क्षेत्र में पूज्य महाराज जी के कार्यक्रम की तैयारी में वयस्त थी। मैं स्वयं भी भिवानी जिले के चरखी दादरी तहसील में किसी कार्यक्रम में था उसी रात को तीन बजे ही कार्यक्रम से हरिद्वार प्रस्थान किया। विशेष विमान से 10 बजे चलकर 1 बजे तक पार्थिव शरीर को देहरादून जोलीग्रान्ट हवाई अड्डे पर लाना था।

पूज्य आचार्य जी स्वयं श्री रामभरत जी को लगातार निर्देश देकर इस कार्य को देख रहे थे। श्रद्धालयम् में अन्तिम दर्शन की व्यवस्था की जा रही थी। पार्थिव शरीर को दर्शन हेतु रखने के लिए बर्फ की व्यवस्था की जा रही थी। सभी कार्यकर्त्ताओं का आग्रह था कि वह भाई राजीव जी के अन्तिम दर्शन करना चाहते हैं। इसलिये उनके पार्थिव शरीर को 30 नवम्बर को योगपीठ में रखने का निर्णय लिया गया। अन्तिम संस्कार व समय 1 दिसम्बर को प्रात: 10 बजे कनखल सती घाट पर रखा गया।

30 नवम्बर 2011 को भिलाई में विशेष विमान से पार्थिव देह को लगभग 1 बजे श्री संजय जी, आचार्य दयासागर जी, भाई प्रदीप जी लेकर देहरादून के लिए चले। इधर भाई राजीव जी के माता-पिता गाजियाबाद में अपने मामा जी के यहां पर थे इनको वहां से हरिद्वार लाया जा रहा था।

माता जी हृदय की मरीज थी तो उनको भाई राजीव जी के देहान्त की जानकारी नही दी गई उनके सिर्फ मामा जी को पता था कि देहान्त हो चुका।

पूज्य महाराज जी भी शिकोहाबाद के अपने दिन के सभी कार्यक्रम निरस्त करके हेलीकॉप्टर के द्वारा आचार्य स्वदेश जी, भाई सुधीर जी तथा कृष्णवीर शर्मा जी के साथ 12 बजे उड़ान भरते हुये 1:30 पर हरिद्वार पहुंच गये।

ठीक 4 बजे विशेष विमान देहरादून के जाली ग्राण्ड हदाई अड्डे पर पहुंचा। वहां पर देहरादून, रूड़की, ऋषिकेश, हरिद्वार के सैकड़ों कार्यकर्त्ता प्रातः 11 बजे से ही रूके हुये थे। तीन बजे पूज्य आचार्य जी स्वयं भाई राजीव जी के पार्थिव शरीर को लेने हवाई अड्डे पर पहुंच गये। रास्ते में पूज्य महाराज जी मुझसे कह रहे थे कि संगठन में हर व्यक्ति का महत्व है लेकिन जो स्थान राजीव का था उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कोई विकल्प नहीं तथा उनके निधन से जो राष्ट्र के नुकसान हुआ है उसकी भरपाई सम्भव नहीं।

ठीक 4 बजे श्री रामभरत जी, पूज्य आचार्य जी अन्दर गये। एम्बूलैंस पहले ही अन्दर जा चुकी थी। विशेष विमान से शव को बाहर निकालकर एम्बूलैंस में रखकर हवाई अड्डे के बाहर लाया गया। वहां पर कार्यकर्त्ताओं ने वाहन को रोक लिया तथा ताबूत के बाहर फूल चढ़ाकर उनको श्रद्धाजंलि दी गयी। सभी कार्यकर्त्ता ने वैदिक मन्त्रोच्चारण किया। 4:30 बजे चलकर 6 बजे के लगभग पार्थिव शरीर को पतंजलि योगपीठ में लाया गया। पूज्य महाराज जी भी बार-बार बीच में फोनकर पूछते रहे।

भाई राजीव जी के माता-पिता को भाई जयदीप जी तथा बहन सुमनाः जी अपने साथ-साथ लेकर जोली ग्राण्ड हवाई अड्डे से ही आ रहे थे।

मैं स्वयं पार्थिव शरीर की एम्बूलैंस में था। बीच में भाई जयदीप जी से बात हो रही थी कि कहां पर हो तो वह बताते थे कि पार्थिव शरीर के वाहन से 5-6 किलोमीटर पीछे है। उन्होंने माता-पिता को बता रखा था कि राजीव भाई की तबीयत थोड़ी खराब है इसलिये उनको पतंजलि मिलवाने के लिये लाया जा रहा है विडम्बना थी इन घण्टों में देश-विदेश में पता लग चुका था कि भाई राजीव जी नही रहे लेकिन उसको जन्म देने वाली मां को ही नहीं पता था कि उसकी आंखों का तारा पूरे संसार को छोड़कर आसमान में विलीन हो चुका है। पतंजलि में ताबुत से पार्थिव शरीर को निकालकर मंच पर बर्फ के ऊपर लिटा दिया गया। पूज्य महाराज जी एवं पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी ने स्वयं भारत स्वाभिमान के ध्वज को उनके शरीर पर लिपटाया। उसके दीप प्रज्जवलन किया गया तथा सभी कार्यकत्ताओं ने भरे मन से, आंसुओं से भरी आंखों से, सिसकते हुये उनके अन्तिम दर्शन किये।

तभी श्रद्धालयम् के पीछे से करूण चित्कारों तथा चीखों से पूरा श्रद्धालयम् दहल गया। पता लगा कि भाई राजीव जी के माता-पिता पहुंच गये तथा अब उनसे और छिपाना सम्भव नहीं था। जैसे ही उनको बताया गया तो वे अपने आपको सम्भाल नही पाये। मां की चीखे तो रूकने का नाम नहीं ले रही थी। बहन सुमनाः जी तथा दो और बहनों ने उनको संभालने की कोशिश की लेकिन मां की क्रन्दन इतना करूण थी जिसको सुनकर पत्थर दिल व्यक्ति भी पिघल जाता। मां की सिसकियां सुनकर हर कार्यकर्त्ता सिसक उठा। मां लगातार दर्द से चीख रही थी कि मेरे राजू तू कहां चला गया.....? देख तेरी मां आयी है..... अब तो उठ जा.....?

मां लगातार विलख रही थी। पिताजी भी अपने होशोहवास में नहीं थे वो भी लगातार रो रहे थे। मां लगातार कह रही थी कि आंखे खोल राजू....., उठ जा राजू..... और मां ने कहा कि उठ राजू. ..... अब तो उठ जा..... आज तेरा जन्मदिन है..... तेरे जन्मदिन वाले दिन ये नहीं हो सकता है...।

मां रो-रोकर क्रन्दन करके अपने होश खो रही थी। बहन सुमनाः उनको सम्भालने की कोशिश कर रही थी, लेकिन मां की पीड़ा के सामने उनकी सारी कोशिशे असफल हो रही थी। उस करूण दृश्य, मां की पुकार को सुनकर सभी के मन में एक विचार तैर रहा था कि काश भगवान अभी उठकर बैठ जाये।

पूज्य महाराज जी ने स्वयं मां को गले लगाकर कहा कि हम सब तुम्हारे पुत्र हैं। तुम्हारे एक-दो नहीं करोड़ों बेटे हैं। पिताजी आचार्य जी का ढाढस बंधा रहे थे। बहुत भावुकतापूर्ण दृश्य था जो ढाढस बंधाने की कोशिश कर रहे थे वह खुद अपना ढाढस खो रहे थे।

अगले दिन प्रातः 7 बजे राजीव जी के पार्थिव शरीर को हल्दी, चन्दन व गंगाजल में नहलाकर अर्थी पर लिटाया गया।

अर्थी को एम्बुलैंस से कनखल में लाया गया। कनखल में लाते हुए एम्बूलैंस में श्री यशदेव शास्त्री जी, श्री संजय जी, श्री चन्द्रदेव जी, डॉ0 जयदीप आर्य जी, श्री राकेश जी एवं भाई प्रदीप जीथे। कनखल में सभी कार्यकर्त्ताओं ने राजीव जी के अन्तिम दर्शक स्वयं पूज्य आचार्य जी ने उनकी अर्थी को कन्धा दिया।

पूज्य महाराज जी के साथ-साथ चल रहे थे वाहनों की कतारों ने श्रद्धानन्द चौक व पूरे कनखल को जाम की सी स्थिति में ला दिया। कनखल की सड़कों पर भाई राजीव जी की अर्थी के पीछे हजारों की भीड़ थी दूर-दूर तक सिर्फ लोग ही लोग दिखाई पड़ रहे थे।

भारत माता की जय....., बन्दे मातरम्....., भाई राजीव जी अमर रहे..... तथा गायत्री मन्त्र के साथ अन्तिम यात्रा निकाली गई। हजारों की संख्या में अपनों दिल में दर्द लिये कार्यकर्त्ता पीछे-पीछे अपने दिल में दर्द लिये राजीव भाई के लिए किसी को भी सर्दी-गर्मी, भूख, प्यास की परवाह नहीं थी। सभी के मन अभी भी यह नहीं मान रहे थे कि भाई राजीव जी हमें छोड़कर चले गये।

पार्थिव शरीर का क्रियाक्रम वैदिक विधि से करना था इसलिये सवा क्विटंल देशी घी, सवा सौ किलो हवन सामग्री, चन्दन की लकड़ी, कपूर, अगर-तगर, केशर के साथ चिता स्वयं पूज्य महाराज जी एवं श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ0 प्रणव पाड्या जी, महन्त राजेन्द्र दास कोठारी जी, आचार्य प्रद्युम्न जी, आचार्य बलदेव जी ने अपने हाथों से सजाई।

विधि का विधान देखिये कि जिस पिता ने राजीव भाई जैसे रत्न को जन्म दिया उसको भी अपने हाथों से अपने पुत्र की चिता में लकड़ी रखनी पड़ी। स्वदेशी खादी वस्त्र में लिपटी भाई राजीव जी की देह को स्वामी जी ने स्वयं तथा भाई प्रदीप जी ने मुखाग्नि दी।

घी व सामग्री के कारण लकड़ियों ने तुरन्त अग्नि पकड़ ली। पांच मिनट में ही लपटे 18 फीट ऊँची श्मशान घाट की बरसात रोकने वाली छत को छूने लगी। अग्नि लगातार प्रज्जवलित हो रही थी। जैसे-जैसे अग्नि की लपटे बढ़ रही थी वैसे-वैसे ही कार्यकर्त्ताओं की सिसकियां तथा आंखों की नमी भी बढ़ रही थी।

श्मशान घाट में साऊण्ड सिस्टम से वैदिक मन्त्रोच्चारण पतंजलि योगपीठ के विद्वान कर रहे

थे। महाराज जी एव आचार्य जी स्वयं चिता में चमचों से चिता में घी डाल रहे थे। सभी कार्यकर्त्ताओं ने भाई राजीव जी की चिता में अपने हाथों से मां भागीरथी के तट पर आहुतियां दी।

श्मशान घाट में एक शोक सभा का आयोजन किया जिसमें सभी ने भाई राजीव जी के निध न को राष्ट्रीय क्षति बताया। सबने कहा कि भाई राजीव जी सदैव हम लोगों के विचारों में, भावनाओं मे जीवित रहेंगे। उन्होंने जिस भारत का सपना देखा है हम उस भारत के सपने को साकार करेंगे। स्वामी जी भारत के सपने को साकार करेंगे। स्वामी जी भारत स्वाभिमान भवन का नाम राजीव भवन रखने की घोषणा की तथा 30 नवम्बर को स्वदेशी निवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया।

चिता की लपटे धीरे-धीरे शान्त हो रही थी। चिता की लपटे बेशक अपने साथ राजीव भाई के शरीर को जला रही थी। उनकी पार्थिव देह को पंच तत्वों में समाहित कर रही थी। लेकिन जैसे-जैसे चिता की लपटे शान्त हो रही थी, वैसे-वैसे ही कार्यकर्त्ताओं के हृदय की, संकल्प की, भावनाओं की अग्नि बढ़ रही थी। उनकी संकल्पना बढ़ रही थी हम कि हम भाई राजीव जी के सपने को साकार करेंगे। हम भाई राजीव के सपनों का भारत बनायेगें।

सामान्य व्यक्ति के मरने के बाद मात्र एक मुट्ठी राख बचती है लेकिन भाई राजीव जी जैसे देशभक्तों के जाने के सिर्फ राख नही बचती वरन् एक वैचारिक क्रान्ति बचती है ऐसी क्रान्ति जो भारत को विश्वगुरु बनायेगी, जो भारत से भ्रष्ट व्यवस्थाओं का उखाड़गी, जो भारत में सम्पूर्ण क्रान्ति करेगी।

आईये ! भाई राजीव जी के बलिदान दिवस पर संकल्प करें कि उनके सपने को साकार करेंगे। उनको सच्ची श्रद्धाजंलि यह होगी कि हम स्वयं अपने जीवन में स्वदेशी का पालन करें तथा दूसरों को भी इसे अपनाने की प्रेरणा दें।